आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 1/मार्च 2026

Received: 15/03/2026; Revised: 18/03/2026; Accepted: 24/03/2026; Published: 28/03/2026

डॉ. अंबेडकर : वैज्ञानिक चेतना के प्रेरक

Dr Soorya E V

Assistant Professor

Department of Hindi

Sree Narayana College Kollam

9682200888

drsooryev@snckollam.ac.in

Dr Soorya E V, डॉ. अंबेडकर: **वैज्ञानिक चेतना के प्रेरक,** आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 1/मार्च 2026**,(57-62)

https://doi.org/10.5281/zenodo.19496666

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

सारांश:

विज्ञान मनुष्य के जीवन से गहराई से जुड़ा हुआ है। हम अपने दैनिक जीवन में जो भी कार्य करते हैं, उनमें किसी न किसी रूप में विज्ञान की उपस्थिति दिखाई देती है। हमारे शरीर की संरचना, हमारे चारों ओर का वातावरण, भोजन करने की प्रक्रिया और जीवन की अनेक गतिविधियाँ विज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे सामान्य जीवन का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है।

मानव इतिहास में भी विज्ञान की भूमिका स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। जब आदिमानव गुफाओं में निवास करता था, तब उसने अनुभव और प्रयोग के माध्यम से कई महत्वपूर्ण खोजें कीं। पत्थरों को आपस में रगड़कर आग उत्पन्न करना भी ऐसी ही एक खोज थी। यह कोई चमत्कारी घटना नहीं थी, बल्कि घर्षण से उत्पन्न ऊर्जा का परिणाम थी। इससे यह सिद्ध होता है कि प्रकृति की घटनाओं के पीछे हमेशा कोई न कोई वैज्ञानिक कारण होता है। इसी प्रकार एक साधारण घटना ने विज्ञान के इतिहास में एक महत्वपूर्ण खोज को जन्म दिया। जब पेड़ से एक सेब गिरा, तो इस घटना ने महान वैज्ञानिक Isaac Newton को गहराई से सोचने के लिए प्रेरित किया। उनके मन में यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि सेब हमेशा पृथ्वी की ओर ही क्यों गिरता है। वह किसी दूसरी दिशा में क्यों नहीं जाता या हवा में क्यों नहीं ठहर जाता। इस जिज्ञासा ने उन्हें इस घटना के पीछे के कारण को खोजने के लिए प्रेरित किया। लगातार अध्ययन और अनुसंधान के बाद उन्होंने गुरुत्वाकर्षण के नियम का प्रतिपादन किया। इस उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास जिज्ञासा और प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति से होता है। संभव है कि न्यूटन से पहले भी अनेक लोगों ने पेड़ से सेब गिरते हुए देखा हो, लेकिन उन्होंने इस घटना के पीछे छिपे कारण को जानने की कोशिश नहीं की। न्यूटन ने इस साधारण घटना को एक समस्या के रूप में लिया और वैज्ञानिक तरीके से उसका समाधान खोजा।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अर्थ है तथ्यों को तर्क, प्रमाण और अनुभव के आधार पर समझना। जब व्यक्ति किसी घटना को बिना सोचे-समझे स्वीकार करने के बजाय उसके कारणों को समझने का प्रयास करता है, तब उसके भीतर वैज्ञानिक सोच विकसित होती है। ऐसी सोच व्यक्ति को सही और गलत के बीच अंतर करने की क्षमता भी प्रदान करती है। इसी प्रकार B. R. Ambedkar भी समाज में वैज्ञानिक चेतना के समर्थक थे। उनका मानना था कि मनुष्य को किसी भी निर्णय पर पहुँचने से पहले अपनी बुद्धि और विवेक का प्रयोग करना चाहिए। केवल परंपराओं या दूसरों की नकल करके कार्य करना उचित नहीं है। उन्होंने लोगों को यह समझाया कि किसी भी बात को स्वीकार करने से पहले उसे तर्क और सत्य की कसौटी पर परखना चाहिए। अपने विचारों और भाषणों के माध्यम से उन्होंने समाज को अंधविश्वास से दूर रहने और तार्किक सोच अपनाने का संदेश दिया। उनका उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना था जहाँ लोग विवेकपूर्ण ढंग से सोचें और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाएँ।

मुख्य शब्द – वैज्ञानिक चेतना, वैज्ञानिक दृष्टि, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, विज्ञान संचार

प्रस्तावना:-

आज भी हमारे देश में बहुत से लोग जब सांप के काटने जैसी घटना का सामना करते हैं, तो झाड़-फूंक करवाने या ओझा/बाबा के पास चले जाते हैं और मान लेते हैं कि उन्हीं के कारण वे ठीक हो गए। असल में ऐसा नहीं होता। असली वजह यह है कि ठीक होने वाले लोग वे होते हैं जिन्हें जहरीले सांप ने काटा ही नहीं होता। देश में पाए जाने वाले लगभग 70% सांप जहरीले नहीं होते। इस स्थिति से लोगों में

अंधविश्वास घर कर जाता है और वे हर बार इसी तरह की परंपराओं का पालन करने लगते हैं। जब कभी किसी को जहरीले सांप ने काट लिया और झाड़-फूंक या अन्य उपाय करने पर भी ठीक नहीं होता, तो लोग इसे भगवान की मर्जी मानकर स्वीकार कर लेते हैं। इसी तरह, मिर्गी के दौरे में लोग प्रभावित व्यक्ति को जूता या चप्पल सुंघा देते हैं और सोचते हैं कि इससे दौरा खत्म हो गया। लेकिन वास्तव में मिर्गी का दौरा निश्चित समय पर स्वतः समाप्त हो जाता है। जूता या चप्पल सुंघाने में लगने वाला समय बस दौरे के खत्म होने के समय से मेल खाता है, इसलिए लोग इसे उपाय मान लेते हैं। ऐसे कई उदाहरण हमारे समाज में रोज़ाना देखने को मिलते हैं। परंपराओं और रीति-रिवाजों के नाम पर लोग अंधविश्वास में बंधे रहते हैं। यह तब होता है जब व्यक्ति में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कमी होती है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण व्यक्ति में तार्किक सोच विकसित करता है और उसे सही-गलत का भेद समझने में मदद करता है। यह सिर्फ विज्ञान और तकनीक तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र और क्रियाकलापों में उपयोगी होता है। विज्ञान संचार इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर तथ्यपूर्ण और तार्किक जानकारी लोगों तक पहुँचाने का कार्य करता है।वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखना हर व्यक्ति का अधिकार है। किसी देश या राज्य की उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि जनता में वैज्ञानिक सोच और दृष्टि विकसित हो। बाबा साहब ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण के महत्व को गहराई से समझा। इसी कारण उन्होंने संविधान के अनुच्छेद 51 (क) में वैज्ञानिक चेतना, वैज्ञानिक अभिरुचि और दृष्टि को बढ़ाने और इसका संवर्धन करने के प्रयास शामिल किए। उन्होंने स्पष्ट किया कि व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह अपने अंदर वैज्ञानिक दृष्टि विकसित करे|

उद्देश्य व महत्व :-

- डॉ. बी. आर. अंबेडकर का समाज में **वैज्ञानिक चेतना** फैलाने में महत्वपूर्ण योगदान |
- **व्यक्तिगत जीवन** में तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण महत्व|
- **सामाजिक सुधार और विकास** में वैज्ञानिक दृष्टि का महत्व|
- **विज्ञान संचार** के माध्यम से लोगों में वैज्ञानिक सोच और समझ पैदा करने का महत्त्व |

वैज्ञानिक दृष्टि के प्रति डॉ. अंबेडकर :-

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने समाज में फैली कई कुरीतियों और परंपराओं पर ध्यान दिया, जो लोगों को अंधविश्वास और भ्रम की ओर ले जाती हैं। ये प्रथाएँ वास्तविकता और तर्क से पूरी तरह मेल नहीं खातीं। हमारे आसपास रोज़मर्रा की जिंदगी में ऐसे कई उदाहरण देखे जा सकते हैं। कुछ प्राचीन कुरीतियाँ समय के साथ समाप्त हो गईं क्योंकि वे तार्किक आधार पर टिक नहीं पाईं, लेकिन कुछ आज भी समाज में जड़ें जमा चुकी हैं। डॉ. अंबेडकर ने अपनी संपूर्ण वाङ्मय में लिखा है कि समाज में यह माना जाता था कि यदि कोई महिला प्रतिदिन वैदिक विधि से अग्निहोत्र करे, तो उसे नरक में जाना पड़ेगा। यह पूरी तरह बिना आधार का विश्वास है। साथ ही, कुछ जगहों पर यह रिवाज भी था कि ब्राह्मण किसी महिला द्वारा बनाया गया भोजन न खाएँ। इसका कोई वास्तविक कारण नहीं था; यह केवल परंपरा बन गई थी जिसे लोग बिना तर्क

के मानते रहे। क्या सचमुच किसी महिला के भोजन बनाने से ब्राह्मण का ज्ञान या पांडित्य कम हो जाएगा? निश्चित रूप से नहीं।

डॉ. अंबेडकर के अनुसार ये सब केवल छुआ-छूत और मानसिक पूर्वाग्रह के कारण समाज में प्रचलित हैं। तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कमी ही इन प्रथाओं को बनाए रखती है। उन्होंने यह भी कहा कि वेदों का अध्ययन और ज्ञानार्जन का अधिकार केवल ब्राह्मणों तक सीमित होना उचित नहीं है। हर व्यक्ति को सीखने और ज्ञान प्राप्त करने का समान अवसर मिलना चाहिए। इस प्रकार, डॉ. अंबेडकर ने यह संदेश दिया कि वैज्ञानिक दृष्टि और तर्कसंगत सोच ही समाज से अंधविश्वास और कुरीतियों को दूर कर सकती है। उनका उद्देश्य एक ऐसा समाज बनाना था जहाँ लोग बिना अंधविश्वास के अपने निर्णय लें और जीवन को तार्किक और न्यायसंगत दृष्टि से देखें।

ज्ञान और तर्कसंगत दृष्टि :-

ज्ञान वह शक्ति है, जिस पर स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमता निर्भर करती है। किसी भी व्यक्ति के सशक्त होने के लिए ज्ञान आवश्यक है। यहाँ 'शक्ति' का मतलब केवल बाहुबल या ताकत नहीं, बल्कि वैज्ञानिक मजबूती और तर्कसंगत क्षमता है। बाबा साहब ने अछूतों की शिक्षा पर विशेष जोर दिया। उन्होंने लंदन में अपने मित्र को लिखा कि यह धारणा छोड़ दी जाए कि माता-पिता केवल बच्चों को जन्म देते हैं और उनका भविष्य बनाने में कोई भूमिका नहीं होती। वे लिखते हैं कि माता-पिता बच्चे के जीवन का निर्माण भी कर सकते हैं। यदि लड़कों के साथ लड़कियों को भी समान शिक्षा दी जाए, तो समाज में अच्छे दिन आ सकते हैं। उनका मानना था कि अधिक से अधिक ज्ञानार्जन करना सभी का लक्ष्य होना चाहिए।

डॉ. अंबेडकर का कहना था कि ऐसी शिक्षा प्राप्त करो जिससे ईश्वर और आत्मा का ज्ञान भी हासिल हो। केवल जानकारी या विद्या होना पर्याप्त नहीं है, उसे व्यवहार में लाना भी उतना ही जरूरी है। केवल पंडिताई और विद्या का होना समाज को कोई लाभ नहीं पहुंचाता। उन्होंने विद्या और पंडिताई से ऊपर प्रज्ञा को महत्व दिया।प्र ज्ञा का अर्थ है सही सोच और तार्किक समझ, यानी संसार, मानव और समाज के बारे में सम्यक दृष्टि रखना। लेकिन प्रज्ञा अकेली पर्याप्त नहीं है; उसके साथ शील का होना अनिवार्य है। शील का मतलब है सम्यक आचरण और नैतिक व्यवहार। अगर व्यक्ति प्रज्ञाशील है लेकिन शीलवान नहीं, तो वह अपने ज्ञान का दुरुपयोग कर सकता है। लेकिन यदि शील के साथ प्रज्ञा हो, तो ज्ञान सुरक्षित और समाजोपयोगी बन जाता है।

बौद्ध धर्म के अनुसार शील के पांच मूल आधार हैं:

1. जीव हत्या न करना
2. चोरी न करना

3. व्यभिचार न करना
4. झूठ न बोलना
5. नशीले पदार्थों का सेवन न करना

इनके बिना ज्ञान का कोई सामाजिक मूल्य नहीं है। ज्ञान का महत्व इसलिए भी है क्योंकि यह व्यक्ति को सम्यक दृष्टि की ओर ले जाता है। अविद्या और अज्ञानता ही सम्यक दृष्टि का सबसे बड़ा विरोधी हैं। डॉ. अंबेडकर कहते थे कि व्यक्ति को मिथ्या और अंधविश्वास से मुक्त होना चाहिए। सम्यक दृष्टि का मतलब है कि मनुष्य अपनी सोच और विचारों में स्वतंत्र हो और केवल अनुभव और यथार्थ पर आधारित निष्कर्ष तक पहुंचे। यही विज्ञान और तर्कसंगत चेतना की नींव है।

वैज्ञानिक दृष्टि को फैलाने में संचार की भूमिका:-

समाज में फैली कुरीतियों, बुराइयों और अंधविश्वास को हटाने तथा वैज्ञानिक दृष्टि को बढ़ावा देने में विज्ञान संचार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से लोगों तक ऐसी जानकारी और तथ्य पहुँचाए जा सकते हैं, जो उनकी वैज्ञानिक अभिवृत्ति को विकसित करें। बड़े पैमाने पर विभिन्न संचार माध्यमों के जरिए यह संदेश लोगों तक आसानी से पहुँचाया जा सकता है। इटली की संचारविद् मार्जिया मॉजोनिटो ने *Journal of Science Communication* के मार्च 2005 अंक में लिखा कि भारत में विज्ञान संचार की असीम संभावनाएं मौजूद हैं। खासकर किशोरों और युवाओं को विज्ञान संचार से जोड़ने की विशेष आवश्यकता है। इससे वे देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था और विकास में वैज्ञानिक दृष्टिकोण महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, और इसके लिए विज्ञान संचार को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। संपादित पुस्तक *'वैज्ञानिक दृष्टिकोण और संचार माध्यम,'* संपादक डॉ. मनोज पटैरिया और डॉ. संजीव भानावत द्वारा, में प्रो. ए.एल. भाटिया ने वैज्ञानिक दृष्टि पर इस प्रकार प्रकाश डाला है कि किसी देश की सभ्यता और प्रगति का आधार उसकी आर्थिक प्रगति है, और आर्थिक प्रगति उस देश की वैज्ञानिक प्रगति पर निर्भर करती है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी स्वयं में स्थिर नहीं हैं; इनमें निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं। जिस देश में विज्ञान लगातार विकसित होता है, वहां की तकनीक और प्रौद्योगिकी भी उसी अनुपात में उन्नति करती है। यदि हम अपने जन-जीवन में वैज्ञानिक सोच को व्यापक रूप से फैलाएँगे, तो उस देश के विकसित होने की संभावनाएं भी उतनी ही अधिक मजबूत होंगी। व्यक्ति की सोच धीरे-धीरे समुदाय की सोच बन जाती है। और समुदाय की सोच पूरे राष्ट्र की प्रवृत्ति के रूप में आकार लेती है। यही देश की सामान्य सोच बनती है। इसलिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण, वैज्ञानिक सोच, वैज्ञानिक अभिरुचि या वैज्ञानिक अभिवृत्ति किसी भी राष्ट्र की विकास यात्रा और प्रगति का आधार है।

निष्कर्ष:-

यदि हम एक विकसित राष्ट्र की कल्पना को साकार करना चाहते हैं, तो हमें धर्मान्धता की बजाय वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना होगा। हमें शिक्षा और ज्ञान को बढ़ावा देना आवश्यक है। जितना अधिक हम वैज्ञानिक सोच को फैलाएँगे, उतनी ही प्रबल होंगी उस देश की विकास की संभावनाएँ। समय के अनुसार परिवर्तन स्वीकारना होगा तभी हम समाज में सुधार ला सकते हैं। शिक्षा और ज्ञान को व्यवहारिक रूप में लागू करना होगा। शिक्षा प्रणाली में सुधार करना आवश्यक है। इसके साथ ही संचार माध्यमों के जरिए संदेश लोगों तक इस तरह पहुँचाने होंगे कि उनकी वैज्ञानिक चेतना विकसित हो सके। यह तभी संभव है जब संचार माध्यम वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सोच को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों का प्रसारण और प्रकाशन करेंगे।आज के समय में बाजारवाद इतना प्रभावशाली हो गया है कि इस तरह की सूचनाओं की पहुँच और महत्व नगण्य दिखाई देता है। हमें ज्ञान के नए मार्ग खोलने होंगे। केवल ऐसा करने पर ही समाज में सकारात्मक बदलाव दिखाई देंगे। सच्ची वैज्ञानिक अभिवृत्ति यही है कि हमें किसी का अनुयायी नहीं बनना है, बल्कि अपना मार्ग स्वयं तय करना है। बाबा साहब का विश्वास था कि समाज में वास्तविक समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे की भावना तभी स्थापित हो सकती है जब लोगों में शिक्षा का प्रसार हो, ज्ञान का विकास हो और वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाएँ। उन्होंने अपने जीवन, विचारों और कार्यों के माध्यम से समाज को यह समझाने का प्रयास किया कि अंधविश्वास और सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति पाने के लिए वैज्ञानिक चेतना का विकास अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

- अंबेडकर, डॉ बी आर, संपूर्ण वांडग्मय,खंड २०, २००३, डॉ अंबेडकर प्रतिष्ठान, नई दिल्ली
- पटैरिया, डॉ मनोज ,भानावत, डॉ. संजीव (संपादक), वैज्ञानिक दृष्टिकोण और संचार माध्यम,२००६, जनसंचार केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय; राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद, जयपुर
- जाटव, डॉ डी आर,डॉ अंबेडकर के समाजशास्त्रीय विचार, १९९६, समता साहित्य सदन, जयपुर
- भानावत, डॉ. संजीव (संपादक), विकास एवं विज्ञान संचार, २००६, जनसंचार केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
- अंबेडकर, डॉ बी आर, संपूर्ण वांडग्मय, खंड ७, १९९८ , डॉ अंबेडकर प्रतिष्ठान ,नई दिल्ली

****